लखिया की मतारी से दुलारी तक

जनार्दन
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी एवं आधुनिक भाषा
विभाग, इलाहाबाद
विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर
प्रदेश।
गोंड आदिवासी समुदाय में जन्म।
विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में में
आलेख, कविता, कहानी और
अनुवाद कार्य प्रकाशित।

'लडकी जात रेंड़ की तरह बॉस-बरेड़ हो जाती है। पैदा होते ही घास-फूस की तरह बढ़ने लगती है। बढ़ने की हूब में वह मतारी-बाप की छाती का पत्थर बनती जाती है। अट्ठारह बरस की हो रही है लखिया। जोग लईका मिलल बा, अबकी हाथ पियर होए के चाही, चाहे जैसे भी हो।" लखिया की मतारी जल्दी-जल्दी गठरी बांधती जा रही थी और मन में बुदबुदाती जा रही थी। रामदयाल बो काकी, रामसुन्नर के भौजी, बेचू के माई, नंदलाल की मझलकी भौजी, लोकई, बुद्धू, रामहरख, बदलू, नरोत्तम, और बेचन की मेहरारू सब की सब तुल्ली सिंह के ट्रैक्टर पर बैठ कर लखिया की मतारीको जोह रही थीं।

गठरी में आटा, नमक, मिर्चा और आलू-प्याज रख कर लखिया के सर पर रखती हुई लखिया की मतारी हुंकार भरते बोली–"जल्दी चल लखिया। अपने दादा और भाई को समय से खिया-पिया देना। और हाँ मैनी और भूरी को चारा-पानी देना मत भूलना। लल्लू के काका से आठ दिन पर दूध का पैसा लेना मत भूलना। सारा पैसा गुल्लक में रखते जाना।" लडकी को समझाते-बुझाते लखिया की मतारी ट्रेक्टर के पास पहुँच गई। लखिया ने गठरी ऊपर थमा दिया। रामसुन्नर की भौजी गठरी थाम कर रख ली। दो-तीन औरतों ने हाथ बढ़ा दिया लखिया की मतारी ट्रैक्टर पर बैठ गई। हारन बजाते हुए ट्रैक्टर ढक-ढक करते आगे बढ़ने लगा। जैकरुल्ला की माई ने जयकारा लगाया–"बोलो बनसत्ती माई की?"

समवेत स्वर–"जय, जय..."

जैकरुल्ला की माई ने फिर जयकारा लगाया–"बोल्लो बाबा मौज डीह की?"

समवेत स्वर–"जय, जय..."

पूरे उल्लास से ट्रैक्टर गाँव से बाहर निकल गई।

सुक्खम-दुक्खम होते-हवाते दो-ढाई घंटे में ट्रैक्टर नदी के किनारे वाले इलाके में पहुँच गई, जहाँ सैकड़ों एकड़ खेत में आलू लगे हुए थे। औरतें ट्रैक्टर से उतरने लगीं। कमासुत औरतों के लिए कास्तकार ने बहुत बड़ा छाजन बना दिया था। यह पुआल की बड़ी से मड़ई की तरह थी, मजदूर औरतों को रहने-ठहरने की व्यस्था थी।

लखिया की मतारी, रामदयाल बो

काकी, रामसुन्नरकी भौजी, बेचूकी

माई, नंदलाल की मझलकी भौजी, लोकई, बुद्धू, रामहरख, बदलू, नरोत्तम, बेचन की मेहरारू और जैकरुल्ला की माई ने एक जगह पुआल डालकर लेवा-गुदड़ी बिछा दिया। कमासुत मजदूर औरतों की गृहस्थी बस गई। कामधाम का आसरा अंजोर हो गया।

दिन कम पड़ता जा रहा था। रात जबरजंग होती जा रही थी। अंधकार के सागर में गागर-सा सूरज डूबने की फिराक में था। पूरब में मटमैले चकत्ते-सा चाँद पूरे दल-बल के साथ हल्का-हल्का दिखने लगा था। अगले दिन से आलू निकालने का काम शुरू होने वाला था। कमासुत औरतें फुर्सत में थीं। छाजन के सामने कई खाली खेत थे। उन्हीं खेतों में अपने-अपने हिसाब से अहरा जोड़ लिया गया। एक खेत में सैजन, और कचनार के पेड़ थे, पेड़ों से सटा एक पक्का नारा (कुआं) था। वहीं से पानी आ रहा था। अलग-अलग गोल की औरतें आलू-प्याज, मिर्चा-नमक और आटा गूँथने में लगी हुई थीं।

लिट्टी-चोखा बनरहा था। लखिया की मतारी और उसकी सखियाँ बतकही में मशगूल थीं। गाँव-गिराव की बातें चल पड़ी थीं।

रामदयाल बो काकी कहती भई-"जेकरपवित्तर पानी में नहात-धोवत जिनगी बितल, चला-चली के बेला में वह आधार छिन गईल। गावं-गिराव के पद-पानी बिला गईल।" बात पूरी करते-करते रामदयाल बो काकी की आँखें नम हो गईं।

"सही कह रही हो काकी, भंडारी माई के पोखरा हम जनानियों की गंगा मैया रहा। तीज-कजरी, फगुआ और तर-त्योहार में हर जनानियों का असरा था वह पोखरा। हम औरतन के पानी हर लिया बकालू सिंह का कपूत।" गुस्से से नन्दलाल की मझली भौजी बोली।

"आउरनाहीं त का। निपुती (बेऔलाद) भंडारी माईने आपन सवा सौ बिगहा कांटे के जमीन से सात गाँव को जल से सींच दिया था। मानुष के साथ-साथ पशु तक आशीष देते थे।" जैकरुल्ला की मतारी बोली।

ओहरा लहक रहा था। गोल-गोल लिट्टी लहकते उपलों पर धरे जा रहे थे। आलू, भंटा और टमाटर आग से बहार निकाल कर पानी से भरी बाल्टी में डाल दिए गए। कई कमासुतनें आलू, बैगन, और टमाटर छिलने में लग गईं। नन्दलाल की भौजी नमक-मिर्च और धनिया बुक (पीस) रही थी।

बिटिया-पतोह वाली जेठ कमासुत औरतें बतकही में लगी हुई थीं।

रामदयाल बो काकी बोल उठीं-"का-का दान दहेज सहेजी हो लखिया खातिर?"

"दान-दहेज की नहीं, परेम की बात है। लड़का को लड़की पसंद है।" लखिया की मतारी ने जवाब दिया।

खाली परेम से बात नहीं बनती है। सुनने में आ रहा है की लड़का छोटी जात का है। अबकी बेचू की माई ने टोका।

"छोटजतिया जरूर है, मगर घर में ट्रक्टर और चौराहे पर आटे-तेल की चक्की है। रानी बनकर रहेगी लखिया।" रामसुन्नर की पतोह ने दिल्लगी की।

"रूप रंग, रुपया-पैसा और धन-दौलत से जात नहीं बदलती। लड़की इज्जत होती है। मैं तो कहती हूँ कि थोडा नरम-गरम ही सही लखिया का जात निकाला मत कर लखिया की मतारी। बिन बाप की बेटी को बिन जात की मत कर। बिना बाप के तो पल गई, बढ़ गई, मगर जात-गोत से बाहर होकर न जी सकेगी, न मर सकेगी।" बात पूरी करते-करते रामदयाल बो काकी काँपने लगी।

"लखिया बिना बाप की बेटी नाय। ओकर बाप साधू बन गया, आए या न आए, मगर जिंदा है।" लखिया की माई की आँखें भर आईं।

"जिन्दानाय, वह मर गया है। मेहर-बिटिया को छोड़ने वाला मरद जनखा होत है, जनखा मरद, नहीं मुर्दा होत है।" रामदयाल बो काकी दहक उठीं।

"आखिर का बात भया, काहे लखिया के बाप घर-गृहस्थी छोड़ साधू बन गए। एतना पानीदार आदमी, एतना बे-पानीदार काहे हो गया।" जैकरुल्ला की माई ने दहकते फोड़ा पर हाथ धर ही दिया आखिर में।

"का बताई बहिन, बस ई जान ल कि गरीबी हमके और लखिया के बाप के बे-पानी कर देहलस। अइसन घाव लगल बा कि न देखावत बने, न दबवात।" लखिया के मतारी के आँख भर आई। मोटे-मोटे आंसू गाल पर ढुलक आये।

"आवासभे खा ल। खाना तैयार हो गईल।" नरोत्तम की मेहरारू ने आवाज दिया।

सारी कमासुत खान-पियन में लग गईं। घंटे भर खान-पियन का कार्यक्रम चला।

◆◆◆

भोर होते ही काश्तकार का कारिंदा

भोला लठैत लाठी लेकर कमासुत औरतों के डेरे पर आ पहुंचा। पहुँचते ही हॉक लगाने लगा- "अरे! उठा हो सब जन। भगवान भाष्कर आकाश में आवे वाला बाड़न। पूरब दिशा ललछौह हो रहल बा। आज बोहनी के दिन बाटे, जगा हो औरत लोगन।"

कमासुत औरतें जागने लगीं। लोटा लेकर कलकलिया नदी के किनारे बढ़ गई। दखिनहिया की तर हवा बह रही थी। "दखिनहिया की हवा से तन तर हो गईल।" अपनी बाँहों को सहलाते हुए (मानों हवा को तन पर मल रही हो) नन्दलाल की मझिलकी भौजी बोली।

"ठीक कहती हो बहू इससे तन तो शीतल हो जाता है, मगर मन की आग पर कोई फरक नहीं पड़ता।" नन्दलाल की मझिलकी भौजी को टोकते हुए लखिया की मतारी बोली।

लखिया की मतारी की बात सेलोकई, बुद्धू, रामहरख, बदलू, नरोत्तम और बेचन की मेहरारू आँखों आँखों में हँसने लगीं।

दिशा-मैदान होते-हवाते झलफलाह (सूरज उगने का समय) हो गया। कुदाल, फावड़ा और दौरी (टोकरी) लेकर कमासुत औरतें खेत में हल गईं। आलू की खनाई शुरू हो गई। झमा-झम काम होने लगा। बड़ी आबाद फसल थी। माटी की हूब बड़े-बड़े सुडौल आलू के रूप सामने थे। किसान खुश थे। तुल्ली सिंह के दादा खेत के किनारे बैठ कर भजन गा रहे थे–

चरन पकड़ धीया रोए,
बाँह पकड़ भाई,
भंवरवा के तोहरा संग जाई,
चरन पकड़।।।।

बुद्धू की मेहर नई-नई थी। चार महीने पहिले गौना हुआ था। बुधुआ बाप का कर्ज उतारने की वास्ते दूर शहर में कमाने गया था। वही बुद्धुआ की मेहर लखिया की मतारी का निहोरा करते कही- "अम्मा कलकलिया नदी के गीत हो जात त काम होत, आउर समय भी कट जात।"

"कलकलिया के गीत बड़ा करमखोर गीत है बहू। ओकरे जीवन में राग नहीं, बिराग है। बहू-बेटी के लायक नहीं बा वह गीत।" लंबी साँस लेती हुई लखिया की मतारी कही।

"अम्मा हम औरतन के किस्मत कलकलिया नदी से जुदा थोड़े बा। आप गीत कढ़ा देहीं। हम सब साथ देंगी।" बुद्धू की मेहर ने पूरे विश्वास से कहा। दूसरी कमासुत औरतें भी बुद्धू की मेहर की हाँ में हाँ मिलाई।

लखिया की मतारी ने गीत छेड़ दिया–

धड़के लागलपथरवा हो
सखी करेजा बन के
नाचे लागलमोरनिया हो
सखी उमंग में भर के
बहे लागलपथरवा हो।।।।
सखी पानी बन के
गमके लागल मनवा हो
सखी प्यार बन के।।।।
सोनाखान आवेलगलें
सखी बनके फूल कुमार हो
महके लागल जंगल जोहर हो
धड़के लागल।।।

कलकलिया के किनारे के खेत-क्यारियाँ गीत और किस्सों से भर गईं। गीत को छेड़कर लखिया की मतारी कलकलिया नदी की कथा शुरू कर दी–"सात पुश्त बाद नौलखा पहाड़ और बन सत्तीमाई के आँगन में बेटी पैदा भई। निपुती पहाड़ के घर आंगन खुशी से भर गईल। जंगल-पहाड़ में सोहर गए जाये लगल। काले खां कोतवाल भी तलवार रखकर अल्लारखा गावे लागलें। बेटी की पैदाइश से सोलहों दिशाओं में कल-कल, छन-छन होवे लागल। नौलखा और बन सत्तीमाई बेटी के नामकलकलिया रख देहलन।। कलकलिया के आवे से धरती माई पर चाँद-सितारा उतर अईलन।

गीत-गवनई होती रही काम भी होता रहा।" कलकलियाके किनारे कलकलिया की कथा कही जा रही थी। लखिया की मतारी आगे कहती भई–"कलकलिया ठहरी लईकी जात। रेड़ की तरह बढ़ती गई। सोलह साल होते-होते सोनवा लोहार के लड़िकासोनाखान एक बार बाँसुरी बनाने के लिए बाँस चुनने के वास्ते जंगल आया।" इतना कहते हुए लखिया की मतारी गाते हुए कथा आगे बढाई–

उलझ गयलनयनवा हो बीच मझार में
सोनाखान लागे लगलन सजनवा हो
समवेत स्वर–*बीच मझार में।।।*
कलकलिया नाचे लगलींजसमोरनिया हो
समवेत स्वर-बीच मझार में।।।

लखिया की मतारी कथा कहने लगी–सोनाखान और कलकलिया की आँख लड़ गई। बात बढ़ गई। लोहार के लईका पहाड़ की लईकी से देर-सबेर मिलने-जुलने लगा। जंगल के कान खड़े हो गए। बात की जात अजब, वैसे भी आग लागी, त धुआं उठबेकरी। बात पहुँचते-पहुँचते नौलखा पहाड़ तक पहुंच गईल। नौलखा पहाड़ और बनसत्ती दोनों को विश्वास नहीं हुआ। फिर भी जंगल पहाड़ के कोतवाल काले खां को कलकलिया पर नजर रखे के वास्ते

कह दिया गया। पहाड़ की बेटी पर नजर रखा जाने लगा।

प्यार-मोहब्बत पर नजर की खबर कलकलिया और सोनाखान को लग गईल। अब वे दोनों सतर्क हो गईलन। पर बिना मिले रहा भी नहीं जा रहा था। एक दिन कलकलिया ने अपने सखी पियरी से सोनाखान को संदेश पठवाया। पियरी ने सखी की बात जस-की तससोनाखान तक पंहुचा दिया–

सखुआ के फूल से कईलीसिंगर
तन अस दहके जसलुआर
पिया बिन नीक न लागे
जल-जंगल दुआर
सखुआ के फूल...।

कलकलिया का संदेश पाकर सोनाखान व्याकुल हो गया। उसकी व्याकुलता को उसके मित्र मणिलाल से छुपी न रह सकी। मणिलाल ने सोनाखान को एक उपाय बताया-"तूँ दोनों जना का प्रेम बादल के पानी की तरह टटकाहो। जैसे बादल का करेजा फटता है, तब धरती ठंढा होती है। तुम दोनों का करेजा फट रहा है। तूँ दोनों जना को मिलना होगा। मिलन का रास्ता है। तुम जानते ही हो की नौलखा और बन सत्ती पहाड़ के बीच में जोगिया बरगद का विशाल पेड़ है। उसके लट को पकड़ कर जलकुण्डीभुईधरा के पास तुम दोनों मिला करो किसी को कानों कान खबर न होगी। काले खान कोतवाल हाथ मलता रह जाएगा।"

इतना कहकर लखिया की मतारी सुस्ताने लगी। कमासुत औरतों को कहानी का मजा मिल चुका था। कुछ समय तक सब शांत रहीं, मगर जब लखिया की मतारी कुछ न बोली, तब बुद्धू की मेहर बोली–"आगे का भया, हे अम्मा?"

गला साफ करके लखिया की मतारी कहानी की डोर थाम ली–

''सोनाखान का संदेश कलकलिया तक पहुँच गया। सात दिन सात रात बाद नौलखा और बनसत्तीमाई को सगोतिया पहाड़ के घर जाना था। कलकलिया को काले खान कोतवाल की निगरानी में रख कर नौलखा और बनसत्तीमाई निकल गए। इसी बीच कलकलिया और सोनाखान का मिलना तय हुआ। सारा तय-तमान कई दिन पहले ही हो गया था।

आधी रात का बखत। बनसत्तीमाई पहाड़ और नौलखा पहाड़ के बीच बहुत गहरी खाई थी। इसी खाई में जलकुण्डी का सोता था। और खाई के बीच में जोगिया बरगद खड़ा था, जिसकी शाखाएं जटाओं की तरह दोनों पहाड़ों को जोड़ रही थी। दूर से देखने पर जोगिया बरगद दढ़ियल साधू की तरह लगता था।

कलकलिया जलकुण्डी के पास एक पत्थर पर बैठी थी। जोगिया बरगद से छन-छन कर चांदनी हिल-डुल रही थी। जलकुण्डी के सोते में पानी सीसे सा चमक रहा था। दोनों पहाड़ों के चारो ओर पहरा था। नंगी तलवार लेकर कालेखान खुद पहरे पर था। जमीन पर पहरा जान कर सोनाखान जोगिया की जटाओं के सहारे जलकुण्डी में आने की सोचा।

बन सत्तीमाई की ओर से जोगिया बरगद की डोरी सी लटकी जटाओं को पकड़ करसोनाखानजलकुण्डी की ओर बढ़ रहा था। रात का बखत और मोटी-पतली डोरी के समान शाखाओं पर पकड़ बनाते हुए कई बार डार से हाथ फिसलते-फिसलते बचा। नीचे सैकड़ों पोरसा की खाई, प्राण कंठ को आ गया। मगर मिलने की आश हिम्मत देता रहा। ऐसे ही बचते-बचाते वह आधा रास्ता तय कर लिया। शाखाओं और डालियों से होते हुए सोनाखान जोगिया पेड़ के एक ताने के पास पहुँचने ही वाला था, तभी हाथ में सुई सा कुछ चुभा, थोड़ी ही देर में सर घुमने लगा, आँखें भरी होने लगीं। पकड़ ढीली पड़ गई। सोनाखान सैकड़ों पोरसा नीचे गिर गया।

नीचे पड़े सोनाखान को देखते ही कलकलिया दहाड़ मार कर चीख पड़ी। दर्द की आवाज पूरी घाटी में गूँज गई। कालेखान के लोग जलकुण्डी की ओर बढ़े, उनके आने तक जलकुण्डी का सोता फूट पड़ा था। लोग कहते हैं कि कलकलिया और सोनाखान का दु:ख देखकर जलकुण्डी का हिरदय फट गया और वह पानी बन गई और वहां से एक नदी बहने लगी। सोनाखान को लेकर कलकलिया नदी में कूद पड़ी। काले खान हाथ मलते रह गया। तभी से जलकुण्डी का नाम मारकुंडी और नदी का नामकलकलिया पड़ गया।'' इतना कहकर लखिया की मतारी चुप हो गई।

काम तो होता रहा। मगर सब कामासुतदु:ख में डूब हुई थीं

काम होने के बाद सब डेरे में आईं। खाना पीना हुआ। रात गहरा रही थी। पलकें भारी होने लगीं। धीरे-धीरे थकान और कहानी के दु:ख से दुखी हृदय को नीद ने अपनी गोद में ले लिया।

दिन हुआ। कमासुत औरतें काम पर गईं और सारा दिन काम करती रहीं। धीरे-धीरे सूरज डूबने लगा था

और दिशाओं में अँधेरा भरता जा रहा था। कमासुत औरतें अपने रहवास में आ चुकी थीं। लखिया की मतारी के साथ कुछ औरतें कलकलिया की ओर बढ़ चलीं। लाल-लाल किरणें कलकलिया पर लप-दप, लप-दप कर रही थीं। रामसुन्नर की भौजी ढलते सूरज और कलकलिया को देखते बोली–"बड़ी अभागन नदी हवकलकलिया, गंगा माई से न मिलकेजर्गो बंधा में मिल जाले। लोग कहेलन कि शाप के कारण ई होला।"

"कलकलियाअभागन नहीं हव। एकर गंगा और तीरथ, दोनों सोनाखान का चौराहै। सोनाखानको छूकर कलकलिया तर जाती है। सोनाखान ही उसका मोक्ष है।" कलकलिया का पानी छूते हुए नन्दलाल की मझिलकी भौजी ने कहा।

चारोकमासुत औरतें कलकलिया में हाथ-मुंह, गोड-हाथ धोकर और थोड़ी देर तक वहां बैठ कर जीव आन-मान करके डेरे की ओर बढ़ गईं।

बहु-बहुरिया खान-पान बनाने में लगी थीं। राम हरख की दुलहिन राग छेड़ दी थी-

आंच भईलजमनवा
नीक ना लागे सखी भवनवा
नद्दीदुबरभईल
काटे लागलसिवनवा
जियल दूभर भईल
रात भईलअन्हार
सखी प्रेम काहे लागल व्यापार
कहाँ बाटें सजनवा
जोग से जोग जुड़े करमवा
जुड़ा बनवली
काजरलगवली
सेज सजवली
काहे रुठलसेन्हुरवा
आंच भईल...

रामहरख की दुलहिन का दु:ख पूरे सिवान में फैल गया था। नदी–नार और पेड़-पौधे रो रहे थे। कलकलिया शांत बह रही थी, जिसे देखकर लगा, मानों वह भी रामहरख की दुलहिन की बिरह पुकार सुनकर कलप उठी हो। कलकलिया की ओर गई औरतें रामहरख की दुलहिन का वियोग सुनकर खुसुर-फुसुर करने लगी थीं।

"जब से कमासुत परदेश गईल। तब से रोवतरहिले। सोना जैसन तन, माटी हो गईल। अरमान में आग लग गईल।" बाबूलाल बो काकी कह उठीं।

"हम औरतन के सबसे बड़ दुश्मन ई गरीबी हरजाई है। यही अहिवात औरतन के अभागनबनावेले। कोई के आदमी साधू हो जालें, और कोई के मनसेधू परदेशी। हमारसवत ई गरीबी बाटे। जब तलक एकरा से मुक्ति ना मिली, तब तलक हमहन के अरमान माटी होत रही।" लखिया के मतारी एक साँस में बोल गईल। जैसे बाढ़ के नदी पानी-बुन्नी के दिन में छोट-मोट अवरोध तोड़ के बहे लागेले।

ठंडी हवा बह रही थी। दिन-भर की हाड़-तोड़ मेहनत के बाद ठंडी-ठंडी हवा कमासुत औरतों को राहत देने में लगी थी। कुछ औरतें आँचल नीचे ढलका दी थीं। शीतल पवन पोर-पोर में समां रहा था। आलू छिलते-छिलते लोकई बो कहने लगी–"बियाह होते ही मुसीबत शुरू, बाल-बच्चा के जनम-मरण, सास-ससुर के हरज-गरज और देवर-देवरान के शादी–बिआहकरत-धरत शरीर माटी हो जाला। आदमी के जनम में कितना करम लिखल बाटे हे बिधाता।"

धीरे-धीरे रात करवट लेने लगी थी। अंधेरा फैल रहा था। लोकई बो की बात सुनकर कमासुत औरतें कुछ समय तक खामोश रहीं। थोड़ी देर बादबेचन की मेहरारू बोली–"एकर उपाय हय। बस ध्यान देवे के जरूरत है।"

"का उपाय बा? तू ही बतावा।" लोकई बो तुरंत पूछ बैठी।

"एक-दूसरे के काम आवे से बेहतर कौन उपाय हो सके। एक-दूसरे के भरोसा बने के चाही।।।" बेचन की दुलहिन बोली।

"नीमन बात कहलू हे बेचन के दुलहिन।।।" सहमती जताते हुए रामदयाल बो काकी बोलीं।

"कुल बात तो ठीक बाटे, मगर मरद के न रहले के दु:ख कैसे कटी हे अम्मा।" अबकी नरोत्तम बो ने मसखरी किया।

नई उमर की अहिवात औरतें हंसने लगीं और पुरनिया औरतें मंद-मंद मुस्कराने लगीं। थोड़ी देर के लिए औरतों ने दु:ख को ठेल कर दूर भगा दिया। दु:ख दूर हट कर दु:ख में फंसी औरतों की दीदा पर अचरज कर रहा था। चाँद-तारों से भरा आकाश धूलो-माटी में काम करने वाली मामूली औरतों को बड़े ध्यान से टुकुर-टुकुर ताक रहा था।

खान-पान होने के बाद सारी औरतें पुआल को ठीक से बिछा कर कुछ बैठ गईं और कुछ लेट गईं। सुख-दु:ख से होते हुए बात किस्से-कहानियों तक चल निकली। राम सुन्नर की पतोहू की बात चल निकली। नरोत्तम की मेहर कहने लगी–"राम सुन्नर के मेहरारू के दु:ख देखलनाही जाला। मनसेधू

बाहर परदेश में तीन साल से रहत बा। घर में देवर के नियत बेईमान हो गईल बा। आजकल फिर दाई के आना–जाना बढ़ गईल बा। बेचारी रात-दिन कलपतरहेले।"

"बात तो सही है। मगर एम्मा राम सुन्नर बो के भी गलती, है ।" नरोत्तम बो काकी कहती भई।

औरतों के कान खड़े हो गए।

"राम सुन्नर बो के गलती!! वह कैसे अम्मा ?"बेचन की मेहर ने सवाल किया।

"ससुराल में आते ही अलगौझी करा बैठी ताकि जेठ के तीन बेटियों की शादी में रुपया न लगावे के पड़े। बूढ़ सास-ससुर को अलग कर दी। देवर को खटने के लिए रख लिया। आग से खेलने वाले कभी-कभी आग से जल भी जाते है। का जरूरत थी तलवार के धार पर दौड़ने की। राम सुन्नरा भी पूरा मेहर मौगा है। बाप-मतारी के छोड़ के धन जीतने गया है। यहाँ घर का धन ही मूस लिया गया। लालच सबको बराबर दंड देती है, चाहे औरत हों या मरद।" नरोत्तम बो काकी ने लम्बी साँस लेते हुए कहा।

"सही बात कही हो काकी। भंडारी माई के साथ भी ऐसा ही हुआ, मगर उन्होंने अपने दु:ख से पार पाकर दूसरों के लिए ऐसा किया की साधारण औरत से सबकी भंडारी माई बन गईं। बेचन बो बोली।वह भी जवान थीं, मगर जवानी अपने करम से गाँव जवार को छाया और पानी से आबाद दिहिन।"

"हे अम्मा भंडारी माई के किस्सा कहीं। रात में ओनकर बात सुन के करेजा भरोसा से भर जाला।" नन्दलाल के मझिलकी भौजी ने लखिया की मतारी का मनुहार किया।

"तुम सब किस्सा-कहानी के लिए हमेशा प्यासी रहती हो। हंसलोलई हमेशा ठीक नहीं।" झिडकते हुए लखिया की मतारी बोली।

"हे अम्मा, माफकरीं मगर भंडारी माई के बात जरूर बताई। आखिर कैसे एक गडेरी के मेहर गाँव-ज्वार के माई हो गईल?" नंदलाल की मझली भौजी ने मनुहार किया।

आखिर में लखिया के मतारी को तैयार होना ही पड़ा। खंखार कर गला साफ करते हुए वह कहने लगी–"हम औरत न जाने कितनी बार अपने को सही साबित की हैं। अब भंडारी माई को ही लिया जाये। उन्होंने गाँव-ज्वार के दु:ख को अपना दु:ख समझा। सभी को भरोसा दिया और सत भंडरिया तालाब बनाकर सभी सात गाँव के जीव-जंतु और पास-परानी के वास्ते पानी की व्यवस्था की। भंडारी माई के इस काम से आसपास की धरती पानीदारभई। साथ ही परती जमीन पर पेड़-पालो के जमने से पशुओं के आहार का जुगाड़ हो गया।"

"मगर अम्मा वह वैरागी कैसे बनी?"बेचन की मेहर ने सवाल किया।

"वैरागी नहीं, वह अनुरागी थीं। फान दी हूँ, तो सब बताऊंगी, धीर ध रो।" बेचन बो को बरजते हुए लखिया की मतारी बोली।

सारी औरतें मन-चित्त से सुनने लगीं।

बात सात पीढ़ी पहले की है। कहने वाले कहते हैं कि जिस साल भंडारी रामफल और सुखिया के आंगन में आई थीं, उस साल खूब बारिश हुई। कई साल का जमा पानी बादल उसी साल में बरसा दिए। ताल-पोखर, नदी-नाले, पानी से लबा-लब। खेतों में खूब अनाज हुआ। कई साल बाद जंगलों में बांस के फूल दिखाई दिए। पहाड़ जड़ी-बूटियों से लद-फन गए थे। गाय-भैंस और भेड़-बकरियों के थन दूध से भर गए थे। रामफल और सुखिया के यहाँ भेड़ों की खूब बाढ़ हुई। सब मिलाकर वह साल उमंग और खुशी का साल रहा। भंडारी को पूरा गाँव चाहत रहा, सिवा ओकरेफुआ के। ओकरफुआनिपुती थी। ओकरफुआशुकली बड़ी गाढ़ और ठस तिवई (औरत) रही। जैसे-जैसे गाँव-जवार में भंडारी के मान सम्मान बाढ़े लागल वैसे-वैसे शुकली के ब्रहमांड में आग लगे लगा। इतना कहते हुए लखिया की मतारी एक गीत छेड़ दी–

बाढ़े लगली भंडारी धीया
ताल-पोखर के धीया
जंगल-पहाड़ के धीया
गाँव-घर के धीया
धरती मैया की पियारीधीया
बाढ़े लगली भंडारी धीया।
बादर पानी से भींगल
पेड़-पौधे लागल रहे फल-फूल
शुकली के जियरा में उठे लागल शूल
हँसे लागलसिवान और बाग
शुकली के ब्रह्माण्ड में जले लागल आग।।।।

आधी पहर पहले की रात। लखिया के मतारी के आवाज गूंजतरही। सारी औरतें ध्यान से भंडारी माई की कहानी सुन रही थीं। कहानी को आगे बढ़ाते हुए लखिया की मतारी कहने लगी। भंडारी निमन कन्या रही–अपने माई-बाप की आँखों का तारा। प्यार-दुलार और मनुहार से पलती बेटी रेंड़ की गाछ की

तरह बढती जात रही। सूरज-चाँद की देख-रेख में पलती- बढती रामफल और सुखिया की धीया देखते-देखते बिआह लायक हो गई। देख हरूओं का आना-जाना बढ़ गया। रामफल और सुखिया की एक ही बेटी थी। वह घर दमदा चाह रहे थे। इसी बात पर बनते-बनते बात बिगड़ जाती रही। वर और वर के घर वालों को कन्या और जमीन का मोह जरूर रहा, मगर कोई घर दामाद बनने को राजी ना होत रहा। शुकली अंदर-अंदर खुश होत रही।

देखते-देखते समय बीतता जा रहा था। कोई घर वर तैयार ना भया। तीन साल बाद जियानपुर का एक नौजवान तैयार भया। उस नौजवान का नाम भोला रहा। नौजवान के मतारी-बाप मर चुके थे। भाई-भौजाई से नेह-परेम का रब्त-जब्त ना रहा। नौजवान जंगल-पहाड़ में लोगन के गाय-भैंस चरावत रहा। इस बात से गाँव ने राहत की सांस ली। शुकली के ब्रह्माण्ड में आग लग गया।

धीरे-धीरे बिआह के दिन आ गया। तैयारी जोरों पर रही। बारात और जनवासे के लिए सदाफलकोहार के खेत को साफ कर दी गई। भंडारी की सारी सहेलियों ससुराल जा चुकी थीं। उसका सिंगार-पठार रिश्ते की भौजाइयों ने किया। भंडारी को ससुराल तो जाना नहीं था, इस वास्ते वह दुखी नहीं रही। बस एक बार जिसके साथ जीना था, उसको, देख लेने के साध मन में जरूर हिलोर ले रही थी। मगर किसी से कह न पाई। इतना कहने के बाद लखिया की मतारी कुछ पल के लिए रुकी और लम्बी साँस लेने के बाद भारी मन से कहती भाई—एक भौजाई के मन में न जाने का उमंग उठा कि वह हाथ पकड़ कर घर के सामने वाले ऊँचे ढूह पर ले आई। वहां झक्क अँधेरा रहा। कोई देख न पाया, मगर दोनों ने भोला को देख लिया। भंडारी का हियाजुड़ा गया। वह अंदर से भींग गई। धीरे-धीरे दोनों ननद-भौजाई ढूह के नीचे आ गईं।

शादी-बिआह का दिन था, सब लोग काम-धाम में लगे थे। सिंदूर दान का बखत आ गया था। दुल्हन मंडवा में आने वाली थी, तभी पहपट मच गया। लोग जनवासे की ओर दौड़ने लगे। भोला के मुंह से झाग निकल रहा था। झाड-फूंक का भी मौका न मिला, सिंदूर दान करने वाला दुनिया छोड़ चुका था। भंडारी की दुनिया बसने से पहले उजड़ गई।

समय-बीतता जा रहा था। कुछ साल बाद रामफल और सुखिया भी दुनिया से बिदा हो गए। भंडारी अकेली पड़ गयी। खेत-खलिहान, घर-द्वार काटने को दौड़ने लगे। मन परेशान-सा रहता। गाँव-ज्वार में वह रौनक न रही। पानी कम बरसने लगा। नदी-नाले और खेत सुने रहने लगे। अन्न-जल की कमी से जन-जनावर और लोग-बाग मरने लगे। भंडारी के आसपास के घर सुने हो गये। गाँव मरघट हो गया रहा।

एक-एक करके दिन-रात जाते रहे। जीवन से ज्यादा मरण होता रहा। हँसता-खेलता गाँव मरघट बन गया था। एक दिन भंडारी गाँव के बचे लोगों को बुलाई। जितने जिंदा थे, उतने आये। अन्न-जल के अभाव में सब हड्डी के ढांचे बन गए रहे। सबको भर आंख देखने के बाद भंडारी बोली-आग और पानी, दोनों जीवन होत है। ई बखत आग ही आग है सगरो दिशा में। जीवन खातिर पानी चाही। पानी के रोके बदे पेड़ और पोखर चाही। दू जून त नहीं, मगर एक जून बदे, जोन्हरी आउर बजड़ा है, गाँव में पानी के वास्ते पेड़ और पोखर बनावे के होई। पहले पोखर खोदाय, बाद में पेड़ लगे के चाही। जतन करके पेड़ के जियावे के पड़ी।

भंडारी माई के बल-भरोसे से सात गाँव में सात पोखर और अट्ठाईस बाग लगाए गए। पहिलका पोखर तैयार होते-होते खूब पानी बरसा। नदी-नाले और ताल-तलैया लबा-लब भर गए। गाँव फिर से अन्न-जल और जीवन से आबाद हो गये। भंडारी के जश आज भी लोग गाते हैं। तालाब और पानी-पेड़ से गाँव घर को आबाद करके बिना बल-बच्चे वाली औरत गाँव-ज्वार की माई बन गई। इतना कह कर लंबी साँस लेते हुए लखिया की मतारी बोली —कहानी गईल बन में, सोचा अपने मन में।

कहानी खत्म हो गई। कमासुत औरतें बहुत देर तक जागती रहीं।

◆◆◆

पूरे पखवारे तक काम-धाम चलता रहा। कमासुत औरतें जी-जान से काम करती रहीं। कलकलिया में नहाते धोते किस्सा कहानी कहते-सुनते लौटने की बारी आ गई।

लौटने के एक दिन पहले कमासुत औरतें सारा कपडा-लत्ता समेट चुकी थीं। खान-पान बन रहा था। तभी रामदयाल बो काकी ने आवाज दिया— "अरे हे लखिया के मतारी, आवा चला खान-पियन हो जाए।"

"हे अम्मा, इतना कहानी-किस्सा सुनने के बादो लखिया के मतारी कहतहईन। हमार इच्छा बाटे कि अब ई कूल बदले के चाही। अब हमारा के

हमरे नाव से पुकारल जाये। ऊ नाव जवन हमार माई-बाप दिए हैं।" बात पूरी करते-करते लखिया की मतारी के चेहरे पर धूप लौट आई।

"हे धीया ई का कहतहऊ, औरतन के नाव से थोड़े बुलावल जाला।" रामदयाल बो काकी का माथा सिकुड़ गया था।

"होला त बुलावे में का दिक्कत बा। कुक्कुर-बिलार नाम से बुलाए जा सके हैं। का औरत जात कुक्कुर-बिलार से गयल-गुजरालहोत हैं? कलकलिया के नाम बाटे, भंडारी माई के नाम बाटे, हम सबका भी नाम है, आज से नाम से बुलाई जाएँगी हम सभी।" नंदलाल की मेहरारू तमकते हुए बोली।

"तोर नाम का बाटे?" बेचू के माई ने सवाल किया।

"हमार नाम सरोज देवी।" इतना कहते हुए सरोज देवी उर्फ नंदलाल की मेहरारू हंसने लगी, गोया कोई मजेदार बात कह गई हो।

"अरे वाह जितना निमन मन और तन है, उतना सुंदर नाम भी है।" रामदयाल बो काकी बोलीं।

"तोहार नाम का बाटे काकी।" सरोज ने रामदयाल बो काकी से नाम पूछ लिया।

"हमार नाम, का बाटे, ई त सोचे के पड़ी।" थोड़ी देर सोचने के बाद बोली-"शायद शुकली। काहे से की एक बेर पतरा बांचे के बखत बिमला के बापूईहे नाम बतवले रहलन पंडित जी के।" सोचते-विचरते हुए रामदयाल बो काकी किसी तरह अपना नाम बता पाई।

इसी हुल्लड़ में सारी औरतों सहित लखिया के मतारी का नाम पहली बार मालूम हुआ कि उसका नाम दुलारी है। सारी औरतें एक-दूसरे का नाम जान चुकी थीं।

अपना देहल नाम पाकर, सारी कमासुत औरतें बड़ी खुश थीं।

दुलारी ने कहा-"आज का दिन हमहन के जीवन के सबसे बड़ा दिन बाटे। हम सबके कमाई के साथ-साथ हमहन के नाम पता चल गयल। अब हमहन के आपन नाम लिखे के सिख लेवे के चाही, ताकि कारड पर नाम पढ़ लिवल जाये। अगला कदम हरफ के तरफ होवे के चाही। आउर हम सभे के जाती-धरम से ऊपर उठ के औरत जात के हित के बात सोचे के चाही। लखिया के बिआह जहाँ लगल बा, वहीं होई। जोग बर पहिले, जात-पात बाद में।" सम्सुन्निस्सा उर्फ जैकरुल्ला के मतारी ने प्रस्ताव रखा, जिसे सब ने फौरन मान लिया। सब हूब में थीं।

आधी रात के बाद तक खान-पियन के साथ सबका नाम ले ले कर हंसलोलई होता रहा। चाँद-तारों सहित असमान भी मुस्करा रहा था।❑

महासंगीति की झलक